कांध जनजाति

स्रोत: द हिंदू

ओडिशा के कंधमाल ज़िले की **कांध/कोंध जनजाति की महिलाओं** में चेहरे पर टैटू गुदवाने की परंपरा धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है, जो एक ओर **अतीत के आघात को और दूसरी ओर वर्तमान के सशक्तीकरण को दर्शाती है।**

- कांध महिलाओं के चेहरे पर गुदवाए जाने वाले टैटू, जो लगभग **10 वर्ष की उम्र से ज्यामितीय आकृतियों** में बनाए जाते थे, सजावटी नहीं बल्कि एक प्रकार की सुरक्षा का माध्यम थे, जो ज़मींदारों, राजघरानों और ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा **यौन शोषण** से बचाव के लिये बनाए जाते थे।
- **कांध जनजाति वर्ष 2001 की जनगणना** के अनुसार यह ओडिशा की सभी **62 जनजातियों में संख्यात्मक रूप से सबसे अधिक है,** जो राज्य की जनजातीय आबादी का **17.13%** है।
    - वे **कुई या कुवी (द्रविड़ भाषाएँ)** बोलते हैं और स्वयं को द्रविड़ मूल की कुई तथा कुवी भाषाओं में '**कुई लोको**', '**कुई एंजू**' या '**कुईंगा**' कहते हैं।
    - **इनमें एकल परिवार सामान्य हैं** और **संयुक्त परिवार बहुत कम पाए जाते हैं।**
    - उनकी आबादी मुख्य रूप से **दक्षिण और मध्य ओडिशा** में विशेषकर **कंधमाल, रायगढ़, कोरापुट और कालाहांडी ज़िलों में केंद्रित है।**
    - कांध समुदायों में, **कुटिया कांध और डोंगरिया कांध** को **विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTG)** के रूप में मान्यता प्राप्त है।
        - **PVTG अनुसूचित जनजातियों का एक अधिक असुरक्षित उप-समूह है।** भारत में 75 PVTG हैं, जिनमें सबसे अधिक **ओडिशा (13)** में हैं, उसके बाद **आंध्र प्रदेश (12)** में हैं।
    - डोंगरिया कांध नियमगिरि पहाड़ियों में खनन का विरोध करने के लिये जाने जाते हैं, जबकि कुटिया कांध अलग-अलग घरों में रहते हैं, जिनकी मंजिलें **गाँव की सड़क के स्तर से लगभग 2 फीट नीचे हैं।**

और पढ़ें: [डोंगरिया कोंध जनजाति]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/kandha-tribe